परमात्म ऊर्जा

आज सर्व पुरूषार्थी आत्माओं को देख-देख खुश हो रहे हैं क्योंकि जानते हैं कि यही श्रेष्ठ आत्मायें सृष्टि को परिवर्तन करने के निमित्त बनी हुई हैं। एक-एक श्रेष्ठ आत्मा नम्बरवार कितनी कमाल कर रही है। वर्तमान समय भले कोई भी कमी व कमज़ोरी है लेकिन भविष्य में यही आत्मायें क्या से क्या बनने वाली हैं और क्या से क्या बनाने वाली हैं! तो भविष्य को देख आप सभी की सम्पूर्ण स्टेज को देख हर्षित हो रहे हैं। सभी से बड़े ते बड़े रूहानी जादूगर हो ना! जैसे जादूगर थोड़े ही समय में बहुत विचित्र खेल दिखाते हैं, वैसे आप रूहानी जादूगर भी अपनी रूहानियत की शक्ति से सारे विश्व को परिवर्तन में लाने वाले हो, कंगाल को डबल ताजधारी बनाने वाले हो। परन्तु इतना बड़ा कार्य स्वयं को बदलने अथवा विश्व को बदलने का, एक ही दृढ़ संकल्प से करने वाले हो। एक ही दृढ़ संकल्प से अपने को बदल देते हो। वह कौन-सा एक दृढ़ संकल्प, जिस एक संकल्प से अपने जन्मों की विस्मृति के संस्कार स्मृति में बदल जाएं? वह एक संकल्प कौन-सा? है भी एक सेकण्ड की बात जिससे स्वयं को बदल लिया। एक ही सेकण्ड का और एक ही संकल्प यह धारण किया कि मैं आत्मा हूँ। इस दृढ़ संकल्प से ही अपने सभी बातों को परिवर्तन में लाया। ऐसे ही, दृढ़ संकल्प से विश्व को भी परिवर्तन में लाते हो। वह एक दृढ़ संकल्प कौन-सा? हम ही विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हैं अर्थात् विश्व कल्याणकारी हैं। इस संकल्प को धारण करने से ही विश्व के परिवर्तन के कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहते हो। तो एक ही संकल्प से अपने को व विश्व को बदल लेते हो, ऐसे रूहानी जादूगर हो। वह जादूगर तो अल्पकाल के चीज़ों को परिवर्तन में लाकर दिखाते हैं लेकिन आप रूहानी जादूगर अविनाशी परिवर्तन, अविनाशी प्राप्ति करने-कराने वाले हो। तो सदा अपने इस श्रेष्ठ मर्तबे और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को सामने रखते हुए हर संकल्प व कर्म करो तो कोई भी संकल्प व कर्म व्यर्थ नहीं होगा। चलते-चलते पुराने शरीर और पुरानी दुनिया में रहते हुए अपने श्रेष्ठ मर्तबे को और श्रेष्ठ कर्त्तव्य को भूल जाने के कारण अनेक प्रकार की भूलें हो जाती हैं। अपने आपको भूलना -यह भी भूल है ना। जो अपने आपको भूलता है वह अनेक भूलों के निमित्त बन जाते हैं। इसलिए अपने मर्तबे को सदैव सामने रखो।

वर्ग पहेली का उत्तर-01

अव्यक्त मुरली 19-03-2000

ऊपर से नीचेः 1. सदा, 3. हार, 6. दया, 9. अपमान, 10. निर्मान, 11. संस्कार, 12. दिलतख्त, 14. जल, 15. नवम्बर, 17. कार, 18. मधुबन, 19. प्रथा, 20. माया।

बायें से दायेंः 1. सरलता, 2. महापुण्य, 4. पुण्य, 5. दाग, 7. संकल्प, 8. कल्प, 13. समाज, 16. नल, 17. रथ, 21.थालियाँ, 22. महान।

नई दिल्ली। भारत के माननीय पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी,ओआरसी निदेशिका। साथ हैं श्रीमती सविता कोविंद,पत्नी रामनाथ कोविंद।

शिमला-हि.प्र.। हिमाचल प्रदेश के विधान सभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ पंथाघाटी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रजनी बहन।

भादरा-राज.। विधायक संजीव बेनीवाल और उनकी धर्मपत्नी प्रधान सन्तोष बेनीवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रकान्ता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. भगवती बहन।

नई दिल्ली। श्रम एवं रोजगार तथा युवा मामले एवं खेल कैबिनेट मंत्री,भारत सरकार मनसुख मंडाविया को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. अनुसूया दीदी।

मंडी-हि.प्र। विधायक पूर्ण चंद ठाकुर को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दीपा बहन। साथ हैं ब्र.कु. टीना बहन।

कालपी-पुखरायां(उ.प्र.)। विधायक विनोद चतुर्वेदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ममता दीदी। इस मौके पर कालपी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. ललिता बहन, माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. नरेंद्र भाई व ब्र.कु. अनुराग भाई उपस्थित रहे।

कथा सरिता

एक शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे थे। तभी एक छात्र ने उनसे सवाल पूछा यदि हम कुछ नया और कुछ अच्छा करना चाहें, परंतु समाज उसका विरोध करे तो हमें क्या करना चाहिए? शिक्षक ने थोड़ी देर कुछ सोचा और बोले बालक में इस प्रश्न का उत्तर कल दूंगा।

अगले दिन शिक्षक सभी छात्रों को नदी तट पर ले गए। उनके हाथ में तीन डंडियां थीं। उन्होंने छात्रों से कहा आज हम एक प्रयोग करेंगे और मछली पकड़ने वाली इन तीन डंडियों को देखो और सभी डंडियां एक ही लकड़ी से बनी हैं।

बार-बार किया गया प्रयास सफलता की ओर ले ही जाता है

इसके बाद शिक्षक ने कल वाले छात्र को बुलाया जिसने उनसे सवाल पूछा था। शिक्षक ने छात्र से कहा ये लो इस लकड़ी की डंडी से मछली पकड़ो। तभी छात्र ने डंडी से बंधे कांटे में थोड़ा आटा लगाया और वह कांटा पानी में डाल दिया। कुछ देर बाद में ही एक बड़ी मछली कांटे में फंस गई और यह देख शिक्षक बोले बालक जल्दी से अपनी पूरी ताकत से मछली को बाहर की ओर खींचो।

छात्र ने, शिक्षक ने जैसा कहा वैसा ही किया पर मछली भी अपनी पूरी ताकत से भागने की कोशिश करने लगी जिससे वह डंडी दो टुकड़ों में टूट गई। यह देख शिक्षक छात्र से बोले कोई बात नहीं बालक तुम ये दूसरी डंडी लो और फिर से प्रयास करो। छात्र ने फिर दूसरे डंडी के कांटे पर थोड़ा आटा लगाकर कांटा पानी में डाला।

अब इस बार मछली वापस कांटे में फंसी तभी शिक्षक बोले आराम से और एकदम हल्के हाथ से कांटे को पानी से ऊपर खींचो। छात्र ने ऐसा ही किया पर मछली ने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि वह डंडी ही छात्र के हाथ से छूट गई। तभी शिक्षक ने तीसरी डंडी छात्र के हाथ में थमाते हुए कहा एक बार फिर से तुम प्रयत्न करो। पर इस बार तुम ना अधिक ज़ोर लगाना और ना ही कम। जितनी शक्ति से कांटे में अटकी मछली खुद को पानी के अंदर की ओर खींचे तुम उतनी ही ताकत से लकड़ी की डंडी को भी बाहर की ओर खींचना और फिर देखना कुछ ही देर में मछली ताकत लगाने से खुद ही थक जाएगी और तब तुम आसानी से उसे बाहर निकाल सकते हो। छात्र ने वैसा ही किया और इस बार मछली पकड़ में आ गई।

छात्र गुरू का संकेत समझ गया कि हम जब भी कुछ अच्छा काम करते हैं तब यह समाज उसका तिरस्कार या नकारता ज़रूर है इसीलिए हमें उनको नकारते हुए अपने काम और लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए।